स्त्री वार्षिक विशेषांक 2019

जनवरी-दिसम्बर

वाद संवाद

rnational Hindi Journal

Scanned by CamScanner

संपादकीय

वाद संवाद मानव को अत्यधिक प्रगतिशील व आशावादी बनाता है । यह तनाव कम करके सामाजिक गतिशीलता को सरल बना देता है । वाद संवाद के माध्यम से व्यक्ति अनेक समस्याओं का हल निकाल लेता है। यह नियमों, व्यवहारों, प्रतिमानों, मनोवृत्तियों एवं आदर्श मूल्यों को व्यक्ति आदर्श में ढालने का प्रयत्न करता है। यह शीत संसार नहीं बल्कि उत्तेजना का संसार है। इसी प्रक्रिया में रघुनंदन त्रिवेदी जी के रचना सार में मानवेत्तर प्रेम को विश्लेषित किया गया है। ग्रामीण आदिवासी महिलाएँ विषयक विचारों में डॉ. राम रतन प्रसाद जी ने बखूबी विश्लेषित किया है। वहीं दूसरी तरफ स्त्री संवेदना को रवि कुमार गौंड ने 'स्त्री गाथा' में अभिव्यक्त किया है। इसी क्रम में डॉ. शेख अब्दुल वहाब ने मन्नू भण्डारी की कहानियों में नारी पक्षधरता के सवाल को उठाया है। रमेश कुमारी ने भारतीय सामाजिक संस्थाएँ और स्त्री के माध्यम से उनकी इन संस्थाओं में भूमिका को स्पष्ट किया है। वहीं डॉ. विजय शंकर मिश्र ने स्त्री की छवि को स्पष्ट करने के लिए भक्तिकाल का सहारा लिया है। डॉ. वन्दना ने भारतीय विकलांग नारी के बारे में बात करके 21वीं सदी में उनकी भूमिका और अधिकार स्पष्ट किए हैं। डॉ. अंजली कायस्था ने नारी विमर्श की खोज समाज में विविध ढंग से की है। डॉ. के. सुमित्रा ने आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण को 8वीं और 9वीं दशकों के संदर्भ में विश्लेषित किया है। डॉ. कल्पना मिश्रा ने स्त्री विमर्श को भक्तिकाल के विविध प्रसंगों से जोड़ा है। इसी क्रम में डॉ. बृजेश कुमार ने भारत और यूरोप के संदर्भ में स्त्री प्रश्न और 21वीं सदी का आलोचनात्मक विश्लेषण किया है। स्त्री की विविध छवियों में मीडिया की कार्यप्रणाली को भी स्पष्ट किया गया है। इसके अलावा स्त्री विमर्श से जुड़े अन्य महत्वपूर्ण आलेख भी हैं जो स्त्री की पहचान को स्थापित करते हैं। अतः यह अंक स्त्री की संघर्ष गाथा को समर्पित है।

संपादक की कलम से ...।

9871423939

Scanned by CamScanner

16. भारतीय सिनेमा और दलित नारी
– मनीषा 87
17. अम्बेडकर : नारी विषयक दृष्टिकोण
– मनोज कुमार सिंह 91
18. आस्ट्रेलिया की समृद्ध पर्यटन-स्थल और हिन्दी
– डॉ. विजय कुमार संदेश 98
19. अंधेरे के विरुद्ध : किसिम किसिम की कविताएँ
– डॉ. (प्रो.) ए. अच्युतन 102
20. आंतरिक शिकायत समिति : यौन शोषण के खिलाफ
– डॉ सीमा सिंह 107
21. प्रवासी लेखिका उषा राजे सक्सेना की कहानियों में स्त्री जीवन
– डॉ. रमेश कुमारी 112
22. पितृसत्तात्मक समाज के हिंसात्मक औज़ार : लोहे की कमरपेटियाँ
– डॉ. श्रीमती विजय 122
23. यशपाल की कहानियों में नारी
– डॉ. एन. सेल्वराज 126
24. समकालीन हिन्दी दलित कहानियों में दलित नारी
– महेश्वरी.ए 138
25. हिन्दी कथा साहित्य में नारी चित्रण
– डॉ. एकता वशिष्ठ 141
26. समकालीन कहानी में जूझती नारी का चित्रण
– डॉ. शेख अब्दुल वहाब 149
27. मृदुला गर्ग की कहानियों में नारी विमर्श
– डॉ. डी. उमादेवी 152
28. वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में नारी विमर्श और आधुनिक परिवेश में
– एस. राजलक्ष्मी 156
29. भीष्म साहनी के साहित्य में नारी
– डॉ. एन. सेंदिल कुमरन 162
30. भारतीय समाज में नारीवाद : वैदिककालीन एवं आन्यान्विक दृष्टिकोण
– श्रीमती मैना 170
31. समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श
– डॉ. अजयपाल सिंह 174
32. औद्योगिक महिला श्रमिकों की दशा और दिशा
– डॉ. मुन्नी चौधरी 179
33. नारी शिक्षा के आयाम
– डॉ. पुष्पेन्द्र सिंह चौहान 205
34. वर्तमान समाज की नारी एक वास्तविक परिदृश्य
– डॉ. अखिलेश विक्रम 208

NSL/ ISSN/ INF/ 2014/ 864 /Refered by NSL/ISSN/CERT/2016/133

त्रैमासिक पत्रिका वाद संवाद, अंक-21-24, स्त्री वार्षिक विशेषांक जनवरी-दिसम्बर, 2019

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में चित्रित नारी विमर्श - आधुनिक परिवेश में

– एस. राजलक्ष्मी

"नारी ही शक्ति है नर की, नारी शोभा है घर की, जो उसे उचित सम्मान मिले घर-समाज में खुशियों के फूल खिलें।–

समाज में रूढ़ हो चुकी मान्यताएं, परंपराओं के प्रति असंतोष और उस से मुक्ति पाने का स्वरही स्त्री विमर्श है। पितृसत्तात्मक समाज के दोहरे नैतिक मापदंडों, मूल्यों व अंतर्विरोधोंको समझने व पहचानने की गहरी दृष्टि हमें चाहिए। यह एक नई विचार को जन्म दिया है आखिर क्यों स्त्रियां अपने मुद्दों, अवस्थाओं और समस्याओं के बारे में नहीं सोच सकती? क्यों उनकी चेतना इतने लंबे समयसे अनुकूलित, अनुशासित, नियंत्रित की जा रही है। सीमोन द बोउआर कहती भी है," स्त्री पुरुष प्रधान समाज की कृति है। वह अपनी सत्ता को बनाए रखने के लिए स्त्री को जन्म से ही अनेक नियमों के ढांचे में ढालता चला गया।"[1] पुरुष समाजस्त्री के चरित्र को स्वर्गिक देवी गुणों और शक्तियों के ढांचों से ऐसा मंडित करता है कि देवीत्व के बोझ तले कब उसका मनुष्यत्व घुट घुट कर दम तोड़ देता है वह स्वयं भी नहीं जान पाती है।महादेवी वर्मा के अनुसार, "स्त्री न घर का अलंकार मात्र बनकर जीवित रहना चाहती है, ना देवता की मूर्ति बन कर प्राण प्रतिष्ठा करना चाहती है। कारण वह जान गई कि एक का अर्थ अन्य की शोभा बढ़ाना है तथा उपयोग ना रहने पर फेंक दिया जाता है तथा दूसरे का अभिप्राय दूर से पूजा पर देखते रहना है जिसे उसे न देकर उसी के नाम पर लोग बांट लेंगे।"[2] इसी वजह से वह स्त्री जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष को चुनौती देकर, अपनी शक्ति का प्रसिद्ध परीक्षण चाहती है ।वह अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व और अपनी पहचान चाहती है । वह अपना पूरा जीवन बेटी, पत्नी, मांके रूप में ही नहीं बल्कि अपनी स्वतंत्र व्यक्तित्व को स्वीकृत किया जाना चाहती है।

पश्चिम में नारीवादी आंदोलन के रूप में अपनी अभिव्यक्ति नारी कर चुकी थी। नारीवाद अंग्रेजी योग के (feminism) फेमिनिज्म शब्द का पर्याय है । 'फेमिनिज्म'' फ्रेंच शब्द 'फेमि' द्धमिउउमऋ अर्थात सामाजिक आंदोलन और इज्म द्धपेउऋ राजनीतिक विचारधारा के मिलन से बना है। इसका प्रयोग सबसे पहले 1880 में फ्रांस,1890 में ग्रेट ब्रिटेन,1910मेंसंयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ है। नारीवादी सिद्धांत महिलाओं द्वारा अपने अधिकारों के लिए के आंदोलन की उपज है। जिसका उद्देश्य समाज में रह रही महिलाओं के अपने निजी अनुभवों द्वारा ललग असमानता की प्रकृति को जानना व उसके माध्यम से सेक्स और जेंडर जैसे विषयों पर सिद्धांत विकसित करना था। नारीवाद को सैद्धांतिक आधार पश्चिम में हुई है, महिलाओं के आंदोलन से

• प्राध्यापिका, हिंदी विभाग, लायोला महाविद्यालय चेन्नई

Scanned by CamScanner